Saarth
E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

पारावारिक विघटन और बालक की मन:स्थिति के संदर्भ मे "आपका बंटी"

डॉ.इन्दुबालाबेन एच. गढवी*

स्वतंत्रता के बाद के हिन्दी रचनाकारों में मन्नु भंडारी एक मनोवैज्ञानिक एवं संवेदनशील लेखिका का स्थान रखती है । 'आपका बंटी मन्नू भंडारी के उन बेजोड़ उपन्यासों में है ,जिनके बिना न बीसवीं शताब्दी के हिन्दी उपन्यास की बात की जा सकती है । बच्चे की निगाहों और घायल होती संवेदना की निगाहों से देखी गई परिवार की यह दुनिया एक भयावह दु:स्वप्न बन जाती है। कहना मुश्किल है कि यह कहानी बालक बंटी की है । सभी तो एक-दूसरे में ऐसे उलझे हैं कि एक की त्रासदी सभी की यातना बन जाती है। शकुन के जीवन का सत्य है कि स्त्री की महत्त्वाकांक्षा और आत्मनिर्भरता पुरुष के लिए चुनौती है - नतीजे में दाम्पत्य तनाव उसे अलगाव तक ला छोड़ता है। यह शकुन का नहीं, समाज में निरन्तर अपनी जगह बनाती, फैलाती और अपना क़द बढ़ाती 'नई स्त्री' का सत्य है। पति-पत्नी के इस द्वन्द्व में यहाँ भी वही सबसे अधिक पीसा जाता है बच्चा बंटी जो नितान्त निर्दोष, निरीह और असुरक्षित है। बच्चे की चेतना में बड़ों के इस संसार को कथाकार मन्नू भंडारी ने पहली बार पहचाना था। बाल मनोविज्ञान की गहरी समझ-बूझ के लिए चर्चित, प्रशंसित इस उपन्यास का हर पृष्ठ ही मर्मस्पर्शी और विचारोत्तेजक है। हिन्दी उपन्यास की एक मूल्यवान उपलब्धि के रूप में आपका बंटी एक कालजयी उपन्यास है ।

मन्नू भंडारी का चर्चित उपन्यास 'आपका बंटी' नौ साल के एक बच्चे बंटी की घायल संवेदनाओं का दस्तावेज है या फिर समाज में अपनी जगह बनाने की कोशिश करती शकुन के जीवन का सत्य, कहना बेहद मुश्किल है । वजह यह हैं कि दोनों की ही अपनी-अपनी त्रासदी हैं और ये आपस में बुरी तरह गुथी हैं। बंटी कोई भी हो सकता है, मेरा बंटी, उसका बंटी या फिर आपका बंटी, लेकिन सचाई यही है कि अगर मां-बाप के बीच अलगाव है, तो पिसेगा सबसे ज्यादा बंटी ही,बिना किसी गलती के,बिना किसी दोष के। यही इस उपन्यास की बेसिक थीम है। यह उपन्यास शकुन और अलग हो चुके उसके पति अजय तथा उनके नौ साल के बेटे बंटी की कहानी है । मां शकुन के साथ रह रहे बंटी का आधा मन अपने पापा की याद में खोया रहता है । अजय के साथ तलाक की प्रक्रिया, शकुन के एक परिचित डॉ. जोशी का उसके नजदीक आना, डॉ. जोशी से शादी को लेकर शकुन के मन में चलने वाले घमाषान की स्थिति और फिर शादी का फैसला जैसे पड़ावों को पार कर उपन्यास उस वक्त एक ममस्पर्शी मोड़ ले लेता है जब शकुन बंटी को लेकर डॉ. जोशी के यहां रहने चली जाती है, लेकिन बंटी का मन डॉ. जोशी को पापा के रूप में स्वीकार नहीं कर पाता। डॉ. जोशी को दी जाने वाली शकुन की सफाई बंटी को पसंद नहीं आती । परिणामस्वरूप मां भी उसे बेगानी लगने लगती है। बंटी को लगता है कि पापा के पास जाने से शायद उसे खुशी मिल जाएगी। अजय बंटी को अपने घर ले जाता है, लेकिन अपनी दूसरी पत्नी और बच्चे के साथ रह रहे अजय के साथ भी बंटी को एक खाली दुनिया ही मिलती है। एक-दूसरे से अलग होकर शुरुआती झंझटों के बाद अजय और शकुन ने तो अपनी-अपनी नई दुनिया बसा लीं, लेकिन बंटी की दुनिया उलझी ही रही, मां शकुन और पापा अजय के बीच। बच्चों की साइकॉलजी की जितनी गहरी-समझबूझ इस उपन्यास से मिलती है, उतनी हिंदी के दूसरे उपन्यासों में कहीं और दुर्लभ है।

***डॉ.इन्दुबालाबेन एच. गढवी, हिन्दी विभाग, सरकारी विनयन कॉलेज,बायड**

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

आपका बंटी मन्नू भंडारी के उन बेजोड़ उपन्यासों में है जिनके बिना न बीसवीं शताब्दी के हिन्दी उपन्यास की बात की सकती है, । यह उपन्यास हिन्दी के लोकप्रिय पुस्तकों की पहली पंक्ति में आता है। यह उपन्यास शकुन तथा अलग हो चुके उसके पति अजय और उनके नौ साल के बेटे बंटी की कहानी है. बंटी छठीं कक्षा में पढ़ने वाला मासूम,जिसके माता-पिता सम्बन्ध-विच्छेद के बाद अलग- अलग रहते हैं, लेकिन बंटी अंजान था कि वो अलग-अलग क्यों है । बच्चे की निगाहों और घायल होती संवेदना की निगाहों से देखी गई परिवार की यह दुनिया एक भयावह दुःस्वप्न बन जाती है। कहना मुश्किल है कि यह कहानी बालक बंटी की है या माँ शकुन की। सभी तो एक-दूसरे में ऐसे उलझे हैं कि त्रासदी सभी की यातना बन जाती है। शकुन के जीवन का सत्य है कि स्त्री की जायज महत्वाकांक्षा और आत्मनिर्भरता पुरुष के लिए चुनौती है-नतीजे में दाम्पत्य तनाव से उसे अलगाव तक ला छोड़ता है। यह शकुन का नहीं, समाज में निरन्तर अपनी जगह बनाती, फैलाती और अपना कद बढ़ाती 'नई स्त्री' का सत्य है। पति-पत्नी के इस द्वन्द में यहाँ भी वही सबसे अधिक पीसा जाता है जो नितान्त निर्दोष, निरीह और असुरक्षित है-बंटी । बच्चे की चेतना में बड़ों के इस संसार को कथाकार मन्नू भंडारी ने पहली बार पहचाना था। बाल मनोविज्ञान की गहरी समझ-बूझ के लिए चर्चित, प्रशंसित इस उपन्यास का हर पृष्ठ ही मर्मस्पर्शी और विचारोत्तेजक है।हिन्दी उपन्यास की एक मूल्यवान उपलब्धि के रूप में आपका बंटी एक कालजयी उपन्यास है । मन्नू भंडारी ने लिखा हैं-"वह बांकुरा की एक साँझ थी।अचानक ही पी. का फ़ोन आया- "तुमसे कुछ बहुत ज़रूरी बात करनी है, जैसे भी हो आज शाम को ही मिलो, बांकुरा में ।" मैं उस ज़रूरी बात से कुछ परिचित भी थी और चिंतित भी। रेस्त्राँ की भीनी रोशनी में मेज़ पर आमने-सामने बैठकर, परेशान और बदहवास पी. ने कहा- "समस्या बंटी की है। तुम्हें शायद मालूम हो कि बंटी की माँ (पी. की पहली पत्नी) ने शादी कर ली। मैं बिलकुल नहीं चाहता कि अब वह वहाँ एक अवांछनीय तत्त्व बनकर रहे, इसलिए तय किया है कि बंटी को मैं अपने पास ले आऊँगा। अब से वह यहीं रहेगा।" और फिर वे देर तक यह बताते रहे कि बंटी से उन्हें कितना लगाव है, और इस नई व्यवस्था में वहाँ रहने से उसकी स्थिति क्या हो जाएगी। मैंने उनकी भावना, चिंता उद्विग्नता को समझते हुए अपनी पहली प्रतिक्रिया व्यक्त की- "आप ऐसा नहीं सोचते कि यह ग़लत होगा ? मुझे लगता है कि उसे अपनी माँ के पास ही रहना चाहिए क्योंकि साल में दो-एक बार मिलने के अलावा उसके साथ आपके आसंग नहीं हैं। जबकि माँ के साथ वह शुरू से रह रहा है, एकछत्र होकर रहा है। इस नाज़ुक उम्र में वहाँ से वह उखड़ जाएगा और संभवत: यहाँ जम नहीं पाएगा।" लंबी बातचीत के बाद तय हुआ कि बंटी अभी कुछ दिनों के लिए वहीं रहे। लेकिन उस दिन लौटते हुए सचमुच बंटी कहीं मेरे साथ चला आया। आकर डायरी में मैंने बंटी की पहली जन्मपत्री बनाई। उस रात बंटी की विभिन्न स्थितियों के न जाने कितने कल्पना-चित्र बनते-बिगड़ते रहे। मुझे लगा, बंटी अपनी नई माँ के घर आ गया है।

नई माँ और पिता के बीच एक बालिका। लगभग छ: महीने बाद की घटना है। ड्राइंग रूम में अनेक बच्चे धमा-चौकड़ी मचाए हैं-उन्मुक्त और निश्चिंत। बारी-बारी से सब सोफ़े पर चढ़कर नीचे छलाँग लगा रहे हैं। उस बच्ची का नंबर आता है । सोफ़े पर चढ़ने से पहले वह अपनी नई माँ की ओर देखती है। माँ शायद उसकी ओर देख भी नहीं रही थी, पर उन अनदेखी नज़रों में भी जाने ऐसा क्या था कि सोफ़े पर चढ़ने के

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

लिए बच्ची का ऊपर उठा हुआ पैर वापस नीचे आ जाता है। बच्ची सहमकर पीछे हट जाती है। अनायास ही मेरे भीतर छ: महीने पहले का बंटी उस वातावरण में व्याप्त एक सहमेपन के रूप में जाग उठता है। खेल उसी तरह चल निकला है, लेकिन अगर कोई इस सारे प्रवाह से अलग हटकर सहमा हुआ कोने में खड़ा है, तो वह है बंटी। रात में सोई तो लगा छ: महीने पहले जिस बंटी को अपने साथ लाई थी, वह सिर्फ़ एक दयनीय मुरझायापन बनकर रह गया है । मैं कमरे में प्रवेश करती हूँ तो चौंकानेवाला दृश्य सामने आता है। टूटी हुई प्लेटें, बिस्कुट और टोस्ट बिखरे पड़े हैं और बंटी माँ के शरीर पर लगातार मुक्के मार रहा है, "...तुम कहाँ गई थीं...किसके साथ गई थीं...क्यों गई थीं...?" मेरी उपस्थिति के बावजूद यह दृश्य थोड़ी देर तक चलता रहा । माँ तिलमिलाहट, गुस्से और दुख को दबाकर मेरे सामने सहज होने की बहुत कोशिश करती है, लेकिन उस वातावरण के दमघोटू तनाव में वहाँ फिर कुछ भी सहज नहीं हो पाता।घर लौटकर मैंने पाया कि बंटी एक आकार ग्रहण करने लगा है। मुझे लगा बंटी किन्हीं एक-दो घरों में नहीं, आज के अनेक परिवारों में-अलग-अलग संदर्भों में, अलग-अलग स्थितियों में मौजूद हैं । लेकिन एक बात मुझे इन बच्चों में समान लगी और वह यह कि ये सभी अपनी जड़ों से कटे हुए हैं। किसी एक व्यक्ति के साथ घटी घटना दया, करूणा और भावुकता पैदा कर सकती है, लेकिन जब अनेक ज़िंदगियाँ एक जैसे साँचे में ही सामने आने लगती हैं तो दया और भावुकता के स्थान पर मन में धीरे-धीरे एक आतंक उभरने लगता है। मेरे साथ भी यही हुआ । बंटी के इन अलग-अलग टुकड़ों ने उस समय मुझे करुणा-विगलित और उच्छ्वसित ही किया था, लेकिन जब सब मिलाकर बंटी मेरे सामने खड़ा हुआ तो मैंने अपने आपको आतंकित ही अधिक पाया, समाज की दिनों-दिन बढ़ती हुई एक ऐसी समस्या के रूप से, जिसका कहीं कोई हल नहीं दिखाई देता । यही कारण है कि बंटी मुझे तूफ़ानी समुद्र-यात्रा में किसी द्वीप पर छूटे हुए अकेले और असहाय बच्चे की तरह नहीं वरन् अपनी यात्रा के कारणों के साथ और समानांतर जीते हुए दिखाई दिया। इसके बाद ही स्थितियों को देखने का सारा धरातल बदल गया। भावना के स्तर पर उद्वेलित और विगलित करनेवाला बंटी जब मेरे सामने एक भयावह सामाजिक समस्या के रूप में आया तो मेरी दृष्टि अनायास ही उसे जन्म देने, बनाने या बिगाड़नेवाले सारे सूत्रों, स्रोतों और संदर्भों की खोज और विश्लेषण की ओर दौड़ पड़ी।

बंटी के तत्काल संदर्भ अजय और शकुन हैं। दूसरे शब्दों में वे संदर्भ अजय और शकुन के वैवाहिक संबंधों काअध्ययन और उसकी परिणति के रूप में ही मेरे सामने आए। यहाँ मुझे भारतजी की बात सही लगी कि जैनेंद्रजी ने स्त्री-पुरुष के संबंधों को जिस एकांतिक दृष्टि से देखा है, उसका एक अनिवार्य आयाम बंटी भी है क्योंकि शकुन-अजय के संबंधों की टकराहट में सबसे अधिक पिसता बंटी ही है। शकुन और अजय के बीच के आपसी तनाव में बेगुनाह बंटी ही इस ट्रैजडी के त्रास को सबसे अधिक भोगता है । बहरहाल, बंटी की यह यात्रा चाहे परिवार की संश्लिष्ट इकाई से टूटकर क्रमश: अकेले, जड़हीन, फ़ालतू और अनचाहे होते जाने की रही हो; लेकिन मेरे लिए यह यात्रा भावुकता, करुणा से गुज़रकर मानसिक यंत्रणा और सामाजिक प्रश्नाकुलता की रही है। जीते-जागते बंटी का तिल-तिल करके समाज की एक बेनाम इकाई-भर बनते चले जाना यदि पाठक को सिर्फ़ अश्रुविगलित ही करता है तो मैं समझूँगी कि यह पत्र सही पतों पर नहीं पहुँचा है। " "ममी ड्रेसिंग टेबुल के सामने बैठी तैयार हो रही हैं। बंटी पीछे खड़ा चुपचाप देख रहा है। ममी जब भी

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

कॉलेज जाने के लिए तैयार होती हैं, बंटी बड़े कौतूहल से देखता है। जान तो वह आज तक नहीं पाया, पर उसे हमेशा लगता है कि ड्रेसिंग टेबुल की इन रंग-बिरंगी शीशियों में, छोटी-बड़ी डिबियों में ज़रूर कोई जादू है कि ममी इन सबको लगाने के बाद एकदम बदल जाती हैं। कम से कम बंटी को ऐसा ही लगता है कि उसकी ममी अब उसकी नहीं रहीं, कोई और ही हो गईं । पूरी तरह तैयार होकर, हाथ में पर्स लेकर ममी ने कहा, "देखो बेटे, धूप में बाहर नहीं निकलना, हाँ ।"2 फिर फूफी को आदेश दिया। "बंटी जो खाए वही बनाना, एकदम बंटी की मर्ज़ी का खाना, समझीं।"चलने से पहले ममी ने उसका गाल थपथपाया। बालों में उँगलियाँ फँसाकर बड़े प्यार से बाल झिंझोड़ दिए। पर बंटी जैसे बुत बना खड़ा रहा। बाँह पकड़कर झूला नहीं, किसी चीज की फरमाइश नहीं की। ममी ने खींचकर उसे अपने पास सटा लिया। पर एकदम चिपककर भी बंटी को लगा जैसे ममी उससे बहुत दूर हैं। और फिर वे सचमुच ही दूर हो गईं। उनकी चप्पल की खटखट जब बरामदे की सीढ़ियों पर पहुँची तो बंटी कमरे के दरवाज़े पर आकर खड़ा हो गया। और ममी जब फाटक खोलकर, सड़क पार करके, घर के ठीक सामने बने कॉलेज में घुसीं तो बंटी दौड़कर अपने घर के फाटक पर खड़ा हो गया। सिर्फ़ दूर जाती हुई ममी को देखने के लिए। वह जानता है, ममी अब पीछे मुड़कर नहीं देखेंगी। नपे-तुले क़दम रखती हुई सीधी चलती चली जाएँगी। जैसे ही अपने कमरे के सामने पहुँचेंगी चपरासी सलाम ठोंकता हुआ दौड़ेगा और चिक उठाएगा। ममी अंदर घुसेंगी और एक बड़ी-सी मेज़ के पीछे रखी कुर्सी पर बैठ जाएँगी। मेज़ पर ढेर सारी चिट्ठियाँ होंगी। फाइलें होगी। उस समय तक ममी एकदम बदल चुकी होंगी। कम से कम बंटी को उस कुर्सी पर बैठी ममी कभी अच्छी नहीं लगीं । पहले जब कभी उसकी छुट्टी होती और ममी की नहीं होती, ममी उसे भी अपने साथ कॉलेज ले जाया करती थीं। चपरासी उसे देखते ही गोद में उठाने लगता तो वह हाथ झटक देता। ममी के कमरे के एक कोने में ही उसके लिए एक छोटी-सी मेज़-कुर्सी लगवा दी जाती, जिस पर बैठकर वह ड्राइंग बनाया करता। कमरे में कोई भी घुसता तो एक बार हँसी लपेटकर, आँखों ही आँखों में ज़रूर उसे दुलरा देता। तब वह ममी की ओर देखता। पर उस कुर्सी पर बैठकर ममी का चेहरा अजीब तरह से सख़्त हो जाया करता है। लगता है, मानो अपने असली चेहरे पर कोई दूसरा चेहरा लगा लिया हो। ममी के पास ज़रूर एक और चेहरा है। चेहरा ही नहीं, आवाज़ भी कैसी सख़्त हो जाती है! बोलती हैं तो लगता है जैसे डाँट रही हों। बंटी को ममी बहुत ही कम डाँटती हैं। बस, प्यार करती हैं इसीलिए यों सख़्त चेहरा लिए डाँटती, प्रिंसिपल की कुर्सी पर बैठी ममी उसे कभी अच्छी नहीं लगतीं।वहाँ उसके और ममी के बीच में बहुत सारी चीज़ें आ जाती हैं। ममी का नक़ली चेहरा, कॉलेज, कॉलेज की बड़ी-सी बिल्डिंग, कॉलेज की ढेर सारी लड़कियाँ, कॉलेज के ढेर सारे काम ! थोड़ी-थोड़ी देर में बजनेवाले घंटे, घंटा बजने पर होनेवाली हलचल...इन सबके एक सिरे पर वह रहता है चुपचाप, सहमा-सा और दूसरे पर ममी रहती हैं-किसी को आदेश देती हुईं, किसी के साथ सलाह-मशवरा करती हुईं, किसी को डाँटती हुई और इसीलिए उसने कॉलेज जाना छोड़ दिया। घर में चाहे वह अकेला रह ले, पर वहां नहीं जाता। वहाँ किसके पास जाए ? ममी तो वहाँ रहती नहीं । रहती हैं बस एक प्रिंसिपल, जिनके चारों ओर बहुत सारे काम, बहुत सारे लोग रहते हैं। नहीं रहता है तो केवल बंटी।

Saarth
E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

टूटते परिवारों के बीच बच्चों को किस मानसिक यातना से गुजरना पड़ता है, इस उपन्यास में लेखिका ने उसे बहुत ही सरल ढंग से अंकित किया है. एक मां के दिल का दर्द, बेटे से दूर होने के बाद भी एक पिता का अपने के लिए प्यार और एक मासूम बेटे का इस बात से बेखबर होना कि आखिर क्यों उसके मम्मी-पापा साथ नहीं है लेखिका ने बेहद ही संवेदनशीलता और स्नेह से अपने उपन्यास में इस कृति को पेश किया है। अपनी साहस भरी लेखनी और बेबाकबयानी के कारण मन्नू भंडारी ने हिन्दी कथा-जगत में अपनी एक अलग पहचान बनाई है, उनकी सीधी-साफ भाषा शैली का सरल और आत्मीय अंदाज, सधा शिल्प और कथा के माध्यम से जीवन के किसी स्पन्दित क्षण को पकड़ना उन विशेषताओं में है, जिसने उन्हें लोकप्रिय बनाया विवाह टूटने की त्रासदी में घुट रहे एक बच्चे को केन्द्रिय विषय बनाकर लिखे गए उनके उपन्यास 'आपका बंटी' ने उन्हें शोहरत के शिखर पर पहुंचा दिया । इस उपन्यास को हिंदी के सर्वाधिक सफलतम उपन्यासों की कतार में शामिल किया जाता हैं। 'आपका बंटी' एक कालजयी उपन्यास है, इसे हिंदी साहित्य की एक मूल्यवान उपलब्धि के रूप में देखा जाता है। इस उपन्यास की खासियत यह है कि यह एक बच्चे की निगाहों से घायल होती संवेदना का बेहद मार्मिक चित्रण करता है जिसमें मध्यमवर्गीय परिवार में संबंध विच्छेद की स्थिति एक बच्चे की दुनिया का भयावह दुःस्वप्न बन जाती है। सभी एक-दूसरे में ऐसे उलझे हैं कि पारिवारिक त्रासदी से उपजी स्थितियां सभी के लिए यातना बन जाती हैं। पति-पत्नी के इस द्वन्द में यहाँ भी वही सबसे अधिक पीसा जाता है, जो नितान्त निर्दोष, निरीह और असुरक्षित है- और वह है बंटी। बच्चे की चेतना में बड़ों के इस संसार को उपन्यासकार मन्नू भंडारी ने पहली बार पहचाना था. बाल मनोविज्ञान की गहरी समझ-बूझ के लिए चर्चित, प्रशंसित इस उपन्यास का हर पृष्ठ ही मर्मस्पर्शी और विचारोत्तेजक है।

संदर्भ सूची :-

(1)आपका बंटी- मन्नू भंडारी
(2) मेरे साक्षात्कार- मन्नू भंडारी
(3)हिन्दी बाल साहित्य का इतिहास-प्रकाश मनु
(4) हिंदी बाल साहित्य की रूप रेखा- डॉ.श्री प्रसाद
(5) हिंदी बाल साहित्य के शीखर व्यक्तित्व-प्रकाश मनु